DR.MALA KUMARI
ASSISTANT PROFESSOR (GUEST TEACHER)
DEPARTMENT OF PSYCHOLOGY
A.N.D COLLEGE SHAHPUR PATORY,SAMASTIPUR
B.A –PART 2 PSYCHOLOGY (HONS)
PAPER-4 ,UNIT-5,
PSYCHOANALYSIS:CONTRIBUTION OF FREUD
LECTURE-37

CONTRIBUTION OF FREUD

फ्रायड का योगदान

मनोविश्लेषण मनोविज्ञान का एक ऐसा स्कूल है जिसकी संस्थापना सिगमंड फ्रायड (1856-1939) द्वारा की गई जो एक चिकित्सक थे तथा जन्म से यहूदी थे |उन्होंने मनोविश्लेषण पद के तीन अर्थ बतलाये जो निम्नांकित है –

(I) मनोविश्लेषण मानसिक रूप से बीमार व्यक्तियों के उपचार की एक विधि है |

(II) मनोविश्लेषण व्यक्तित्व का एक सिद्धांत है |

(III) मनोविश्लेषण मनोविज्ञान का एक सम्प्रदाय या स्कूल है |

फ्रायड का जन्म 6 मई 1856 को ऑस्ट्रेलिया के फ्रीवर्ग शहर में हुआ था | उनके पिता एक ऊन के गरीब व्यापारी थे तीन साल की उम्र में फ्रायड के माता-पिता लिपजिग आ गए और उसके बाद वियाना चले गए जहाँ वे 80 सालों तक रहे | 1938 में हिटलर के नाज़ी विद्रोह के कारण वे भाग कर लंदन चले गए यहाँ 29 सितम्बर ,1939 को उनकी मृत्यु हो गयी

वियाना में यहूदियों के लिए दो पेशा अधिक पसंद किया जाता था –चिकित्सा शास्त्र तथा क़ानून | फ्रायड ने चिकित्सा शास्त्र को अपनाया | वे 1873 में वियाना विश्वविद्यालय में प्रवेश पाए तथा 1881 में एम०डी० की उपाधि प्राप्त की |उनमे तंत्रिका विज्ञान की और विशेष झुकाव था तथा 1873 से 1871 के बीच में उनका संपर्क उस समय के मशहूर तंत्रिका विज्ञानी अर्नस्ट ब्रुकी से हुआ | फ्रायड उनके प्रयोग शाला में कार्य करना प्रारंभ कर दिए |

1881 M.D उपाधि प्राप्त करने के थोड़ा पहले फ्रायड का सम्पर्क व्रियुअरजो वियाना के जाने-माने चिकित्साशास्त्री थे ,से हुआ | इन दोनों ने मिलकर एक अति मशहूर शोधपत्र 'स्टडीज़ इन हिस्ट्रीया' प्रकाशित किये \ मनोविज्ञान के इतिहासकारों ने 1895 के साल को इसलिए महत्वपूर्ण माना है क्योंकि इसी साल एक सम्प्रदाय के रूप में मनोविश्लेषण की शुरुआत हुयी

थी | सचमुच में उस शोधपत्र में मनोविश्लेषण की उत्पत्ति के अंकुर या बीज छुपे थे |

एक शैक्षिक मनोविज्ञानी के मनोविज्ञान के सामान फ्रायड के मनोविज्ञान में क्रमबद्धता देखने को नहीं मिलता है |फिर भी उनके विचार एवं संप्रत्ययों की व्याख्या कई जिल्दों में कि गयी है जिनका विस्तृत वर्णन करना तो यहाँ संभव नहीं है इसके बावजूद फ्रायड द्वारा मनोविश्लेषण के सम्प्रदाय के तरह किये गए योगदानो को निम्नांकित सात शीर्षकों में बाँट कर अध्ययन किया जा सकता है –

(I) स्थलाकृतिक संरचना : चेतन,अर्द्धचेतन तथा अचेतन फ्रायड ने मन के दो मुख्य स्तर बतलाये थे चेतन तथा अचेतन | अचेतन के तो भिन्न स्तर होते है – अचेतन ख़ास तथा पूर्वचेतन या अर्धचेतन चेतन ने वे सारे मानसिक तत्व होते है जिससे व्यक्ति एक दिए हुए क्षण से अवगत होता है | पुर्वचेतन से या अर्धचेतन से तात्पर्य वैसे मानसिक तत्वों से होता है जो चेतन में तो नहीं होते है परन्तु थोड़ी सी प्रयास करने पर उन्हें चेतना में आसानी से लाया जा सकता है | यही कारण है की इसे प्राप्य स्मृति भी कहा जाता है |

फ्रायड के अनुसार अचेतन मन का सबसे बड़ा हिस्सा होता है | इसमें वे सारे मानसिक तत्व होते है जो चेतन में नहीं आ पाते है या बड़ी कठनाई से चेतन में आ पाते है |

(II) संरचनात्मक मॉडल : उपाहं , अहं तथा पराहं-फ्रायड ने मन को संरचनात्मक दृष्टी कोण से अर्थात विकासात्मक दृष्टी कोण से निम्नांकित तीन भागो में बाँटा है – उपाहं (ID),अहं (EGO),तथा पराहं (SUPER EGO) इड व्यक्तित्व का जैविक तत्व है | यह ऐसा मानसिक एजेंसी होता है जो जन्म जात होता है तथा व्यक्ति की शारीरिक संरचना से सम्बद्ध होता है |इड की इच्छाएँ तथा आवेग असंगठित होते है तथा कोई नियम तथा क़ानून को नहीं मानने वाले होते है इड अपनी इच्छाओं की तुरंत पूर्ति करना चाहता है तथा वह उसके परिणाम की चिंता कुछ भी नहीं करता है | इसे फ्रायड ने आनंद नियम की संज्ञा दिया है |
जब शिशु कुछ बड़ा हो जाता है , तो उसके इड की प्रवृतियों से ही ईगो का विकास होता है |वह व्यक्ति के पुरे जीवन काल तक वर्धित होते रहता है | ईगो मन का वह भाग होता है जिसका सम्बन्ध वास्तविकता से होता है |यह वास्तविकता के नियमों द्वारा निर्धारित होती है जिसमे व्यक्ति सामाजिक

वास्तविकता को ध्यान में रखते हुए अपनी सारी शारीरिक एवं मानसिक उर्जाओं का उपयोग करता है | सुपर ईगो व्यक्तित्व का नैतिक कमांडर होता है | ईगो के सामान इसका कोई अपना उर्जा नहीं होता है इसका निर्धारण आदर्शवादी नियम द्वारा होता है | अंत में फ्रायड ने यह भी स्पष्ट कर दिया की मन के इन तीनो शाखाओं बीच कोई तीखा अंतर नहीं होता है |

(III) मानसिक उर्जा तथा मूल प्रवृति का सिद्धांत – फ्रायड का मत था की मानव जाती में एक जटिल उर्जा तंत्र होता है उन्होंने ने दो तरह के उर्जा शक्ति का वर्णन किया है | दैहिक उर्जा तथा मानसिक उर्जा दैहिक उर्जा की उत्पत्ति भोजन से होता है और इसका उपयोग शारीरिक क्रियाओ जैसे सांस लेना , टहलना ,दौड़ना ,लिखना आदि में किया जाता है |

मानसिक उर्जा की उत्पत्ति उत्तेजन के न्युरोदैहिक अवस्था से होता है |उन्होंने यह भी मत जाहिर किया है की ये दोनों उर्जाएँ एक दुसरे में परिवर्तित हो सकती है तथा इसका उपयोग वैज्ञानिक क्रियाओं जैसे ,चिंतन करने में किया जाता है |

किसी दैहिक अवस्था को पूरा करने के लिए जो इच्छा या मनोवैज्ञानिक कल्पना होता है , उसे मूल प्रवृति कहा जाया है |जैसे प्यास की मूल प्रवृति शारीरिक

कोशिकाओं में पानी की कमी से उत्पन्न होता है और पानी पिने के मानसिक इच्छा के रूप में अभिव्यक्त होती है | अतः मूल प्रवृति द्वारा मानसिक उर्जा की मात्रा का पता चलता है और सभी मूल प्रवृति एक साथ मिलकर व्यक्तित्व के कुल उर्जा का निर्धारण करता है |

(IV) दुश्चिंता एवं प्रतिरक्षा प्रक्रम – फ्रायड ने दुश्चिंता को स्पष्टतः परिभाषित नहीं किया है ,फिर भी उन्होंने यह स्पष्ट किया है जब व्यक्ति का ईगो को किसी तरह के खतरा से धमकी पहुँचता है ,तो इसमें दुश्चिंता उत्पन्न होता है |अतः फ्रायड के अनुसार दुश्चिंता एक ऐसा सम्वेगिक दुखद अवस्था है जिसमे एक ऐसा दैहिक संवेदन होता है जो व्यक्ति को संभावित खतरे से सतर्क होने की सुचना देता है | उन्होंने दुश्चिंता के तीन प्रकार बतलाये है –

(i)वास्तविक दुश्चिंता (ii)तंत्रिकातापी दुश्चिंता (iii)नैतिक दुश्चिंता

दुश्चिंता का चाहे कोई भी प्रकार क्यों न हो ,व्यक्ति का अहं अपने आप को उससे रक्षा करना चाहता है |इसके लिए वह कुछ विशेष प्रक्रम को अपनाते है जिसे रक्षा प्रक्रम या अहं रक्षा प्रक्रम भी कहा जाता है |

फ्रायड ने कई रक्षा प्रक्रमों को बतलाया है जो प्रमुख है (i)दमन (ll)प्रतिक्रिया निर्माण (iii)प्रतिगमन (iv)प्रक्षेपण (v)यौक्तिकिकरण (vi)उदान्तीकरण (vii)विस्थापन

(5)मनोलौंगिक विकास की अवस्थाएँ –फ्रायड के अनुसार पाँच मनोलौंगिक अवस्थाएँ है –(i)मुखा अवस्था (ii)गुदावस्था (iii)लिंग प्रधानावस्था या शिश्नावस्था (vi)अव्यक्तावस्था (v)जननेन्द्रियावस्था

(6)फ्रायड का समाज मनोविज्ञान –फ्रायड ने 1913 में 'टोटेम एंड टैबू' नामक पुस्तक का प्रकाशन किया जिसमें समाज मनोविज्ञान के कुछ पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है |इस पुस्तक में वे पुरातन व्यक्तियों तथा उनके धर्म का मनोविश्लेषणात्मक व्याख्या प्रस्तुत किया है |

(7)मन –शरीर समस्या –फ्रायड मन –शरीर समस्या पर कोई खास प्रकाश नही डाले है |जोन्स (1953)ने यह स्पष्ट किया कि कई ऐसे उदाहरण है जिनसे यह पता चलता है कि इस समस्या पर भी वे अपना विचार व्यक्त करना चाहते थे |

स्पष्ट हुआ कि फ्रायाडियन मनोविश्लेषण एक काफी विस्तृत सम्प्रदाय है जिसका प्रभाव आधुनिक मनोविज्ञान पर काफी पड़ा |

इसके इस समग्र प्रभाव के कारण ही इसे मनोविज्ञान का 'प्रथम बल 'कहा गया है |

फ्रायड द्वारा प्रतिपादित 'मनोविश्लेषण' का सम्प्रदाय अपनी लोकप्रियता के कारण काफी चर्चित रहा है |अंत में 23 सितम्बर 1939 ई० में मुँह के कैंसर होने के कारण फ्रायड सदा के लिए चिर निद्रा में सो गए |